स्वच्छ भारत कैसे बने एक चुनौती

डॉ0 कृष्णा शुक्ला

Assistant Professor,
PGDAV College (Eve.), University of Delhi, Delhi

1 पृष्ठभूमि:

स्वच्छता की बात करते हैं तो सर्वप्रथम ध्यान प्रकृति की ओर जाता है । कैसे प्रकृति अपनी स्वच्छता स्वयं बनाये रखती है। गर्मियों में कड़ाके की गर्मी व धूल भरी आँधी से सब तरफ मिट्टी ही मिट्टी का साम्राज्य हो जाता है पेड–पौधे झुलस जाते हैं तो वर्षा ऋतु में मेघ अपने जल से सब मिट्टी धोकर साफ कर देते हैं। पतझड़ में पुराने पत्ते झड़ जाते हैं। बसंत ऋतु में नयी कोपलें फूट जाती हैं। पेड–पौधों की सुदंरता लौट आती है। यह भी स्वच्छता का ही एक जीता जागता उदाहरण है।

प्राचीन काल से प्रचलित है कि जहाँ स्वच्छता होती है वहाँ देवताओं का वास होता है। पहले प्रदूषण इतनी जबरदस्त समस्या नहीं थी, वाहनों की इतनी बडी संख्या नहीं थी, जीवन सरल था अतः लोग दीपावली पर ही सफाई को महत्व देते थे, प्लास्टिक का इतना प्रचलन नहीं था अतः गंदगी भी इतनी नही होती थी किंतु आधुनिक युग में इतनी चीजों का अविष्कार हो गया है जिसके कारण देश में गंदगी के पहाड़ बन गये हैं। जैसे – विभिन्न वस्तुओं के रैपर्स, पेय पदाथों की बोतलें, च्यूंइगम, पान मसाला व गुटका, प्लास्टिक की थैलियां।

अस्वच्छता फैलाने में देशवासियों का बड़ा भारी योगदान है । लोंगों को स्वच्छता का महत्व ही मालूम नही है व लोग इसके प्रति जागरूक भी नही हैं । साथ ही आजादी के इतने वर्षों के बाद भी किसी भी सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इतने बड़े कूड़े के पहाड़ का कैसे निस्तारण हो तो प्रतिदिन जो कूड़ा निकलता है उसका कैसे निवारण किया जाये। केवल नेता झाडू पकड़ कर फोटो खिंचवा ले इससे इस समस्या का हल नही निकाला जा सकता है ।

2 महत्व:

स्वच्छता का मतलब केवल साफ सुथरे कपड़े पहनना या बड़े–बड़े आलीशान घरों में रहना तथा उन्हे ही स्वच्छ रखना ही स्वच्छता नही है । स्वच्छता का मतलब जहाँ हम रहते हैं उस गली, शहर को

स्वच्छ बनाने के साथ–साथ सड़कों, सार्वजनिक स्थलों, दीवारों, नदियों व जल के अन्य स्त्रोंतो, देश की मुद्रा, पेड पौधों आदि की सफाई का ध्यान रखना है। अपने घर का कूड़ा पडोसियों के घर के बाहर या गली में नही फैंकना हैं। आवश्यकता है देशवासियों को सफाई का महत्व समझाने व उसे बनाने के लिए नैतिकता का पाठ पढानें की । इसके लिए परिवार, शिक्षक, बुद्धिजीवी वर्ग, मीडिया सरकार व कानून व्यवस्था सभी को मिलकार काम करना होगा। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है। बीमारियों से छुटकारा मिलता है। देश की संस्कृति की रक्षा होती है। विदेशों में गौरव बढता है। ये पाठ छोटे बच्चों को ही नही प्रत्येक नागरिक को पढाना चाहिए। पर्यावरण को हानि पहुॅचााने वाली वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाना होगा। खाद्य पदार्थों की सुरक्षा व स्वच्छता के संबंध में भी कठोर कानून बनाने चाहिए ताकि इनमें हानिकारक पदार्थों की मिलावट ना की जाये। स्वच्छ भोजन भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

पंचवर्षीय योजनाओं की भांति स्वच्छा की योजना बनाकर छोटे से छोटे स्तर पर इस कार्य को लागू करके हर क्षेत्र में इसे लागू करना चाहिए। इसके लिए संसाधनों की व्यवस्था करनी चाहिए तथा सफलतापूर्वक क्रियान्वित के साथ–साथ इसका आंकलन व अंकेक्षण भी करना चाहिए की इसका क्या परिणाम मिला।

3 शोध विधिः

दिल्ली के एक अति समृद्ध इलाके व एकझुग्गी झोपड़ी इलाके के निवासियों से चर्चा करने पर जो तथ्य उभरकर सामने आये वे इस प्रकार है। समृद्ध इलाके के लोग केवल अपने व्यवसाय व रोजगार में व्यस्त हैं। वे भी गंदगी फैलाने में अपने योगदान के प्रति उदासीन हैं। उनके घरों की पानी की मोटर घंटों फालतू चलती रहती है। नालियों की व्यवस्था न होने के कारण कीमती पानी सड़कों पर फैलता रहता है उनकी कीमती गाड़ियाँ पाईप के द्वारा धोई जाती हैं जो की सड़कों को गंदा करती हैं तथा कीमती पानी की बर्बादी करती हैं। उनके यहाँ कूड़ा लेने वाले लोग आते हैं किंतु समय पर कूड़ा न देकर उनके नौकर नौकरानियाँ दूसरों के दरवाजे के बाहर कूड़ा डालने में नहीं हिचकते हैं। उनसे इस विषय में बात करने पर उन्होंने कहा कि हमें इन सब बातों के लिए समय नहीं है। हमारे नौकरों से बात करें। झुग्गी झोपड़ी के लोगों से बात करने पर जो तथ्य उभर कर सामने आये वे इस प्रकार हैं कि ज्यादातर लोग सोचते हैं कि यह उनका विषय ही नहीं है तथा उनकी एक बहुत बड़ी समस्या घरों में शौचालय नहीं है। सुलभ शौचालय रात 8 बजे से सुबह 5 बजे तक बंद रहते हैं। अन्य कोई विकल्प ना होने के कारण वे सड़कों के किनारे मलमूत्र का त्याग करते हैं साथ ही सुलभ शौचालय में पुरूषों से पैसे वसूल किए जाते हैं। अतः पैसा बचाने के चक्कर में भी वे सड़क के किनारे ही बैठते हैं। वे कहते हैं कि ''सरकार क्या करती है''? वे अपनी गली मुहल्लों से दूर समृद्ध घरों के पिछवाड़े में तथा पार्कों के पीछे भयंकर गंदगी फैलाते हैं। नालियों की व्यवस्था ना होने के कारण गंदा पानी सड़कों पर फैलता रहता है। यह है हमारे देश में गरीब व अमीर लोगों की स्वच्छता के प्रति जागरूकता की तस्वीर।

कूड़ा घरों से समय–समय पर कूड़ा नहीं उठता है तथा जो लोग कूड़ा घरों से एकत्रित करके लाते हैं उसमें से छटाई करके बेचे जाने योग्य सामान की छंटाई में वे इसे दूर–दूर से लाकर जमा करते रहते हैं जब कूड़ा उठता है तो दूर–दूर एक बड़ी भयंकर बदबू फैलती रहती है जिसका कोई विकल्प नहीं है।

गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियों में उद्योग धंधों व शहरों की गंदगी प्रवाहित होती है जिससे ये नदियाँ गंदे नालों में तब्दील हो गई हैं। अंधाधुंध प्लास्टिक के प्रयोग से सारी नालियाँ रूक गई हैं। पेड़–पौधों की कटाई व कंक्रीट की बहु मंजिला मकानों के कारण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

वाहनों की निरंतर बढ़ती संख्या के कारण हवा जहरीली बन रही है। प्रर्याप्त मात्रा में मजबूत सड़कों का न होना व किसी न किसी कारण से उनकी खुदाई होते रहने के कारण सड़कों की हालत निरंतर खराब होती रहती है जिसका भी गंदगी बढ़ाने में बड़ा योगदान है।

4 सुझावः

- लोगों को स्वच्छता का महत्व समझाया जाये तथा उन्हें इसके प्रति जागरूक बनाया जाये।
- स्वच्छता की योजना कहाँ से और कैसे प्रारंभ की जाये सरकार विभिन्न वर्गों से विचारविमर्श करके एक ढ़ाँचा व रूपरेखा तैयार करें।
- जनता की भागीदारी व सुझाव मांगे जायें।
- स्वच्छता पर कितना खर्च करना होगा इसका आकलन किया जाये।
- राशि कैसे जुटानी होगी इसका रूपरेखा तैयार की जाये।
- केवल बाहरी स्वच्छता ही नहीं आंतरिक स्वच्क्षता पर भी ध्यान दिया जाये।
- देश में जमा कूड़े के ढेरों का निस्तारण कैसे हो इसकी समुचित व्यवस्था की जाये।
- लोगों को स्वच्छता के लिए प्रशिक्षण दिया जाये।
- रेलवे स्टेशन, सड़कों के किनारे, फल व सब्जी बाजारों में भी लोगों के हाथ धोने व मलमूत्र का त्याग करने की व्यवस्था हो जिनकी सफाई का इंतजाम हो।
- नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट, शहरी गंदगी व नालों के बहाव को रोका जाये।
- अस्वच्छता फैलाने वाली व पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली वस्तुओं का प्रयोग प्रतिबंधित हो।
- स्वच्छता का कड़ाई से पालने कराने के लिए कड़े कानून बनाये जाये तथा उल्लंघन करने वालों पर भारी जुर्माना या दंड लगाया जाये।
- समाजसेवी व स्वयंसेवी संस्थाओं को इस कार्य में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाये।
- मीडिया व सरकार को मिलकर इस विषय पर चर्चाएं आयोजित करनी चाहिए तथा लोगों का ध्यान इस तरफ आकर्शित करना चाहिए।

- स्वच्छतम शहर या गाँव के लिए सरकार कोई कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा करे।
- समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित करें व उसका मूल्यांकन करें।
- कॉरपोरेट सोशल रैस्पोंसिबिलिटी से स्वच्छता को जोड़ा जाये।
- सांसद, विधायक व पार्षद अपने–अपने क्षेत्र की स्वच्छता का जिम्मा लें व उसमें आई अड़चनों को दूर करें।

5 **निष्कर्ष :**

स्वच्छता हमारे देश के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है तथा उपरोक्त सुझावों को लागू करके काफी हद तक स्वच्छता बनाई जा सकती है। प्रधानमंत्री ने जो स्वच्छता का कार्यक्रम प्रारंभ किया है, उसमें जनभागीदारी अत्यंत आवश्यक है। देशवासियों की जागरूकता व सहयोग के बिना किसी भी कार्यक्रम की क्रियान्विती व सफलता संभव नहीं है। सरकार ने स्वच्छता के नाम पर जो कर लगाना प्रारंभ किया है उसका सही उपयोग होना भी जरूरी है। बड़े औद्योगिक घरानों को भी इसमें अपना योगदान देना चाहिए। सबसे बड़ी जरूरत है स्वच्छता सिखाने की। लोग जगह–जगह पान, गुटखा खा कर न थूकें, देश की मुद्रा पर लिखकर गंदा ना करें, सभ्यतापूर्ण आचरण करें, गंदगी ना फैलायें। सड़कों को साफ–सुथरा बनाने में सहयोग करें, चाहें जहाँ कचरा ना फैलायें, ऐतिहासिक इमारतों पर ना लिखें, कूड़े का समुचित निस्तारण हो, सड़कों की खुदाई ना हो, सभी शहरों व गाँवों में शौचालय बनाये जायें, नालियाँ बनाई जायें, पानी की बर्बादी रोकी जाये। हर एक नागरिक को देश की स्वच्छता के प्रति जिम्मेदार बनाया जाये। पालन न करने वालों पर कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाये। जुर्माना व दंड दिया जाये। वृक्षारोपण पर अधिक से अधिक जोर दिया जाये। वाहनों का प्रयोग कम–से–कम किया जाये। पैदल चलने से सेहत के फायदों का ज्ञान कराया जाये। देश में तेजी से बढ़ती डायबिटीज व ब्लडप्रेशर के कारणों से सेडेन्टरी लाईफ स्टाईल है। गाड़ियों का प्रयोग न करके पैदल चलने से उसमें भी कमी होगी।

स्वच्छता से केवल देश सुंदर ही नहीं लगेगा अच्छा स्वास्थ्य भी प्राप्त होगा। विदेशों में भी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विदेशी सैलानी घूमने आयेंगे तो देश की आय में भी वृद्धि होगी। अतः अगर हम अपने देश को स्वच्छ बनाने का प्रण ले लें तो हमारे देश का आर्थिक विकास व समृद्धि का रास्ता भी खुल जायेगा।